धूमावतीतन्त्रम्

अथ धूमावतीध्यानम्

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा॥
काकध्वजरथारुढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्ताऽतिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥

अथ यन्त्रोद्धारः

अनुक्तकल्पे यन्त्रं तु लिखेत् पद्मं दलाष्टकम्।
षट्कोणकर्णिकं तत्र वेदद्वारोपशोभितम्॥

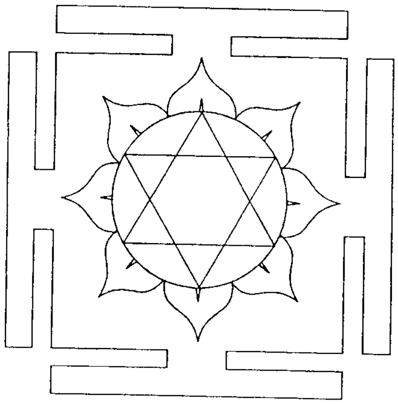

अथ मन्त्रोद्धारः

दान्तौ सार्वीशबिन्द्वन्तौ बीजे धूमावती द्विठः।
धूमावतीमनुः प्रोक्तो वैरिनिग्रहकारकः॥

अथ मन्त्रः

धूँ धूँ धूमावती ठः ठः

अथ पूजाविधिः

तत्र प्रथममृष्यादिन्यासं कुर्यात्। शिरसि **पिप्पलादमुनये नमः** मुखे **निचृच्छन्दसे नमः हृदिधूमावत्यै देवतायै नमः।**

अथाङ्गन्यासः—

ॐ धाँ हृदयाय नमः ॐ धीं शिरसे स्वाहा ॐ धूँ शिखायै वषट् ॐ धैं कवचाय हूम्। ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ धः अस्त्राय फट्। ततः करन्यासः। **ॐ धाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ धीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॐ धूँ मध्यायाभ्यां वषट् ॐ धैं अनामिकाभ्यां हूम् ॐ धौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ धः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।**

ततो ध्यानम्—

विवर्णा चञ्चला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा॥ १ ॥

काकध्वजरथारुढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्ताऽतिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता॥ २ ॥

प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥ ३ ॥ 3

इति ध्यात्वा प्राणादीन् प्रतिष्ठापयेत्।

तद् यथा—

आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ षँ सँ हों ॐ क्षँ सँ हँ सः ह्रीं ॐ हँ सः श्रीमद्धूमावत्याः प्राणा इह प्राणाः। आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ शँ हों ॐ क्षँ सँ हँ सः ह्रीं ओं हँ सः श्रीमद्धूमावत्या जीव इह स्थितः। ॐ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हों ॐ क्षँ सँ हँ सः ह्रीं ॐ हँ सः श्रीमद्धूमावत्याः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हों ॐ क्षँ सँ हँ सः ह्रीं ॐ हँ सः श्रीमद्धूमावत्या वाङ्मनश्चक्षुश्श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ततो देवतारूपमात्मानं ध्यात्वा प्राणायाममृष्यादिन्यास-षडङ्गन्यासकरन्यासान् विधाय मातृकान्यासमाचरेत्। तत्र **ओमस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयस्तदुभयं कीलकमभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगः।** शिरसि **ब्रह्मणे ऋषये नमः** मुखे **गायत्रीछन्दसे नमः।** हृदि **मातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः।** लिङ्गे **हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः** पादयोः **स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः।** सर्वाङ्गे **तदुभयकीलकाय नमः।**

अथ षडङ्गन्यासः—

अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ हृदयाय नमः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईं शिरसे स्वाहा उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ शिखायै वषट् एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐं कवचाय हूम् ओं पँ फँ बँ भँ मँ औं नेत्रत्रयाय वौषट् अँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ ङँ क्षँ अः अस्त्राय फट्।

एवं करन्यासो यथा—

अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ऊँ मध्यमाभ्यां वषट्। एँ तँ थँ दँ धँ नँ ऐं अनामिकाभ्यां हूम् ओं पँ फँ बँ भँ मँ औं कनिष्ठकाभ्यां बौषट् अँ यँ रँ लँ वँ शं षँ सँ हँ क्षँ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अथ मातृकान्यासः—

ललाटे **अँ नमः** मुखवृत्ते **आँ नमः** दक्षनेत्रे **इं नमः** वामनेत्रे **ईं नमः** दक्षकर्णे **उँ नमः** वामकर्णे **ऊँ नमः** दक्षनासायाम् **ऋँ नमः** वामनासायाम् **ॠँ नमः** दक्षगण्डे **ऌँ नमः** वामगण्डे **ॡँ नमः** ऊर्ध्वोष्ठे **एँ नमः** अधरोष्ठे **ऐं नमः** ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ **ओं नमः** अधोदन्तपङ्क्तौ **ओं नमः** शिरसि **अँ नमः** मुखे **अः नमः** दक्षिणबाहुमूले **कँ नमः** कूर्परे **खँ नमः**

मणिबन्धे **गँ नमः** अङ्गुलीमूले **घँ नमः** अङ्गुल्यग्रे **ङँ नमः** वामबाहुमूले **चँ नमः** कूर्परे **छँ नमः** मणिबन्धे **जं नमः** अङ्गुलीमूले **झँ नमः** अङ्गुल्यग्रे **ञँ नमः** दक्षिणोरुमूले **टँ नमः** जानुनि **ठँ नमः** गुल्फे **डँ नमः** अङ्गुलीमूले **ढं नमः** अङ्गुल्यग्रे **णँ नमः** वामोरुमूले **तँ नमः** जानुनि **थं नमः** गुल्फे **दँ नमः** अङ्गुलीमूले **धँ नमः** अङ्गुल्यग्रे **नँ नमः** दक्षपार्श्वे **पँ नमः** वामपार्श्वे **फँ नमः** पृष्ठे **बँ नमः** नाभौ **भँ नमः** उदरे **मँ नमः** हृदये **यँ त्वगात्मने नमः** दक्षांसे **रँ असृगात्मने नमः** ककुदि **लँ मांसात्मने नमः** वामांसे **वँ मेदात्मने नमः** हृदयाद् दक्षभुजाग्रान्तं **शमस्थ्यात्मने नमः** हृदयाद् वामभुजाग्रान्तं **षँ मज्जात्मने नमः** हृदयाद् दक्षपादाग्रान्तं **सँ शुक्रात्मने नमः** हृदादिवामपादाग्रान्तं **हँ आत्मने नमः** हृदयान्मस्तकान्तं **क्षं परमात्मने नमः**।

इति बहिर्मातृकान्यासः। ततो मानसैरुपचारैर्देवीं पूजयेत्।

तत्र प्रार्थयेदनेन मन्त्रेण—

धूमावति स्वागतं ते सन्निधौ भव साम्प्रतम्।
गृहाण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाविताम्॥

ततोऽष्टोत्तरशतं मूलमन्त्रं वर्णमय्या मालया जपेत्। इति मानसी पूजाविधिः।

अथ बहिःपूजा

तत्र प्राणायामषडङ्गन्यासादि विधाय प्रथमं चतुःषोडशाष्टवारजपेन मूलमन्त्रेण पूरककुम्भकरेचकाख्यं प्राणायामत्रयं कृत्वा ततः षडङ्गन्यासादि कुर्यात्।

तद् यथा—

धां हृदयाय नमः धीं शिरसे स्वाहा धूँ शिखायै वषट् धैं कवचाय हूम् धौं नेत्रत्रयाय वौषट् धः अस्त्राय फट्। इति छोटिकया दिग्बन्धनं कुर्यात्।

एवं करन्यासः—

धां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः धीं तर्जनीभ्यां स्वाहा धूँ मध्यमाभ्यां वषट् धैं अनामिकाभ्यां हूम् धौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् धः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं न्यासादि कृत्वा अर्घ्यस्थापनं कुर्यात्।

तद् यथा—

त्रिकोणवृत्तषट्कोणचतुरस्रमण्डलं विरच्य इमिति विलिख्य मूलमन्त्रेण त्रिकोणं सम्पूज्य षडङ्गेषु षडङ्गं सम्पूज्य। चतुरस्रे **पूर्णगिरिपीठाय नमः** इति पूर्वे **उड्डीयानपीठाय**

नमः इति दक्षिणे **कामरूपपीठाय नमः** इति पश्चिमे **जालन्धरपीठाय नमः** इत्युत्तरे। इति सम्पूज्य। मध्ये **ॐ आधारशक्तये नमः** इति सम्पूज्य त्रिकोणगर्भषट्कोणभूषितां यन्त्रिकां मूलेन **संस्थाप्य नमः** इति सामान्यार्घ्यस्थजलेनाभ्युक्ष्य—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रेवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

वषडित्यनेन गालिनीमुद्रां प्रदर्श्य **वमिति** धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य इष्टदेवतां ध्यात्वा सम्पूज्य सकलीकृत्य शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य षट्कोणे षडङ्गं सम्पूज्य पूर्ववद्धूमावतीं देवीं ध्यात्वा आवाहयेत्।

तद् यथा—

मूलमन्त्रं पठन् **ॐ भगवति धूमावति इहागच्छ** इति प्रसारितसंहताङ्गुलीमूलपर्वणोरङ्गुष्ठौ निःक्षिप्य आवाहयेत्। मूलं पठन् **धूमावति देवि इह तिष्ठ** इत्यधोमुख्या मुद्राः स्थापयेत्। मूलं पठन् पद्ममुद्रया पुष्पाद्यासनं दद्यात्।

ततः—

ॐ अस्मिन् वरासने देवि सुखासीनेऽक्षरात्मिके।
प्रतिष्ठिता भवेः सा त्वं प्रसीद परमेश्वरि॥

मूलं च पठन् **इह प्रतिष्ठिता भवेति** पूर्वोक्तया मुद्रया प्रतिष्ठापयेत्। पूर्वोक्तप्राणप्रतिष्ठाविधिना प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ततो मूलमन्त्रेणार्घ्योदकेन त्रिःप्रोक्षणम्। ततः पाद्यम्। मूलं पठन् **इदं पाद्यं श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति पादयोर्दद्यात्। ततो मूलं पठन् **इदमाचमनीयं श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति मुखे दद्यात्। मूलं पठन् **साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीधूमावत्यै इमं मधुघृतशर्करादधिदुग्धसङ्घात्मकं मधुपर्कं निवेदयामि नमः** इति मुखे दद्यात्। मूलं पठन् **इदं पुनराचमनीयं साङ्गायै इत्यादि श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति मुखे दद्यात्। मूलं पठन् **इदमर्घ्यं साङ्गायै इत्यादि श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति शिरसि दद्यात्। मूलं पठन् **इदं हरिद्राद्युद्वर्तनं साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः।**

ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि॥

मूलं च पठन् **इदं स्नानीयं साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति शतकृत्वः सहस्रकृत्वो यथाशक्ति वा स्नापयेत्। मूलं पठन् **इदं वासः साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति वासो दद्यात्। मूलं पठन् **इदमुत्तरीयं साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इत्युत्तरीयं दद्यात्। मूलं पठन् **इदं चन्दनं साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः**। मूलं पठन् **एतान् अक्षतान् साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः**। मूलं पठन् **एतानि पुष्पाणि साङ्गायै** इत्यादि **श्री धूमावत्यै वौषट्**। जयध्वनिमातः **स्वाहेति** घण्टां सम्पूज्य मूलं पठन्—

ॐ वनस्पतिरसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

एष धूपः साङ्गायै इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति वामहस्तेन घण्टां वादयन् दक्षतर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्शयन् देवतागुणान् कीर्तयन् नाभिदेशतो धूपयेत्। मूलं पठन् **एष पुष्पाञ्जलिः साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति पुष्पाञ्जलित्रयं दद्यात्।

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

मूलं पठन् मध्याङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्शयन् नेत्रप्रदेशे दीपं दर्शयेत्। घृतदीपो दक्षिणे तैलदीपो वामतः।

ॐ सत्पात्रसिद्धं सहविर्विविधानेकभक्षणम्।
निवेदयामि देवेशि कृपया त्वं गृहाण तत्॥

मूलं पठन् ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य शङ्खोदकेन निवेदयेत्।

ॐ समस्तं देव देवेशि सर्वावाप्ति करं परम्॥
अखण्डानन्दसम्पूर्णे गृहाण जलमुत्तमम्।

इति पानीयं च दत्वा चुलुकं विधिवद् दद्यात्॥

ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागवल्लीदलैर्युतम्।
पूगभागेरितं देवि ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

मूलं पठन् **इदं ताम्बूलं साङ्गायै** इत्यादि **श्रीधूमावत्यै निवेदयामि नमः** इति मुखप्रदेशे तत्त्वमुद्रया दद्यात्। ततः पुष्पाञ्चलित्रयं दद्यात्। बलिदानप्रकारेण यथाशक्ति बलिमपि दद्यात्।

इति श्रीमद्धूमावतीपूजाविधानं सम्पूर्णण्।

अथ स्तोत्रम्

प्रातर्या स्यात् कुमारी कुसुमकलिकया जापमाला जपन्ती
मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम्।
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती
सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान्॥ १ ॥

बद्ध्वा खट्वाङ्गकोटौ कपिलवरजटामण्डलं पद्मयोनेः
कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं तार्क्ष्यपक्षैः।
पूर्णं रक्तैः सुराणां यममहिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ
पायाद् वो वन्द्यमानप्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम्॥ २ ॥

चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्दसङ्घातमुग्रं
कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशाङ्गी।
नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमां स्फारयन्ती मुखाब्जं
पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमा जल्पमाना भ्रमन्ती॥ ३ ॥

टण्टण्टण्टण्टटण्टाप्रकरटमटमानाटघण्टां वहन्ती
स्फेंस्फेंस्फेंस्कारकाराटकटकिटहसानादसङ्घट्टभीमा।
लोलं मुण्डाग्रमालाललहलहलहालोललोलाग्रवाचं
चर्वन्ती चण्डमुण्डं मटमटमटिते चर्वयन्ती पुनातु॥ ४ ॥

वामे कर्णे मृगाङ्कप्रलयपरिगतं दक्षिणे सूर्यबिम्बं
कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकटजटाजूटके मुण्डमालाम्।
स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकङ्कालभारं
संहारे धारयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली॥ ५ ॥

तैलाभ्यक्तैकवेणीत्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रान्तकर्णा
लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिनकामात्मनः पादशोभाम्।
दिग्वासारासभेन ग्रसति जगदिदं यायवाकर्णपूरा
वर्षिण्यातिप्रबद्धा ध्वजविततभुजा साऽसि देवि त्वमेव॥ ६ ॥

सङ्ग्रामे हेतिकृत्वैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभि-
र्मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा।
दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरजघनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची
शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्रा निशायाम्॥ ७ ॥

दंष्ट्रा रौद्रे मुखेऽस्मिस्तंव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्धात्
संसारस्यान्तकाले नररुधिरवशासम्प्लवे भूमधूम्रे।
काली कापालिकी सा शवशयनतरा योगिनी योगमुद्रा
रक्तारुद्धिः सभास्था मरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्ठा॥ ८ ॥

धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम्।
यः पठेत् साधको भक्त्या सिद्धिं विन्दति वाञ्छिताम्॥ ९ ॥

महापदि महाघोरे महारोगे महारणे।
शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनां मोहने तथा॥ १० ॥

पठेत् स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत्।
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगाः॥ ११ ॥

सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वेस्तोत्रस्मरणमात्रतः।
दूराद् दूरतरं यान्ति किं पुनर्मानुषादयः॥ १२ ॥

स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले।
सर्वशान्तिर्भवेद् देवि ह्यन्ते निर्वाणतां व्रजेत् ॥ १३ ॥

इत्यूर्ध्वाम्नाये धूमावतीस्तोत्रं समाप्तम्।

अथ कवचम्

श्रीपार्वत्युवाच—

धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतं विस्तरतो मया।
कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे॥

श्रीभैरव उवाच—

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे।
कवचं श्रीधूमावत्याः शत्रुनिग्रहकारकम्॥

ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः।
योगिनोऽभवञ्छत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावत्॥

ओमस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलाद ऋषिरनुष्टुपछन्दः श्रीधूमावतीदेवता धूँ बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं शत्रुहनने पाठे विनियोगः।

ॐ धूँ बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु।
धूमा नेत्रयुगं पातु वतीकर्णौ सदाऽवतु।
दीर्घातूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा॥

शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी।
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम्।
सर्वा विद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम्॥

चञ्चला हृदयं पातु दुष्टा पार्श्वं सदाऽवतु।
धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा।
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता देवी भयदा कलहप्रिया।
सर्वाङ्गं पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी।
इति ते कवचं पुण्यं कथितं भुवि दुर्लभम्।
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे।
पठनीयं महादेवि त्रिसन्ध्यं ध्यानतत्परैः।
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत्।

इति भैरवीभैरवसंवादे धूमावतीतत्त्वे धूमावतीकवचं सम्पूर्णम्।

अथ हृदयम्

ओमस्य श्रीधूमावती हृदयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीधूमावती देवता धूं बीजं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वशत्रुसंहारणे पाठे विनियोगः।

अथाङ्गन्यासः—

ओं धाँ हृदयाय नमः धीं शिरसे स्वाहा धूँ शिखायै वषट् धैं कवचाय हूम् धौं नेत्रत्रयाय वौषट् धः अस्त्राय फट्।

एवं करन्यासो यथा—

धां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः धीं तर्जनीभ्यां स्वाहा धूं मध्यमाभ्यां वषट् धैं अनामिकाभ्यां हूम् धौं कनिष्ठाभ्यां वौषट् धः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

अथ ध्यानम्—

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥ १ ॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलं मधुकैटभौ।
कल्पान्ते त्रिजगत् सर्वं धूमावतीं भजामि ताम्॥ २ ॥

खट्वाङ्गधारिणी सर्वा खण्डिनी खलरक्षसाम्।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम्।॥ ३ ॥

गुणागारा गम्यगुणा या गुणा गुणवर्धिनी।
गीतावेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम्॥ ४ ॥

घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥ ५ ॥

चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम्।
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ६ ॥

छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां च्छिन्नमस्तास्वरूपिणीम्।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥ ७ ॥

जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनीम्।
जल्पन्ती बहुगर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥ ८ ॥

झङ्कारकारिणा झञ्झाझञ्झमाझमवादिनीम्।
झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ९ ॥

टीपटङ्कारसंयुक्तां धनुष्टङ्कारकारिणीम्।
घोराघनघटाटोपां वन्दे धूमावतीमहम्॥ १० ॥

ठण्ठण्ठण्ठम्मनुप्रीतिण्ठःठःमन्त्रस्वरूपिणीम्।
ठमकाह्वगतिप्रीतां भजे धूमावतीमहम्॥ ११ ॥

डमरूडिंण्डिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम्।
डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम्॥ १२ ॥

ढक्कानादेन सन्तुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम्।
ढक्कावादचलच्चितां भजे धूमावतीमहम्॥ १३ ॥

तत्त्ववार्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम्।
तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम्॥ १४ ॥

थांथीं थूंथें मन्त्ररूपां थैंथौंथंथ:स्वरूपिणीम्।
थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम्॥ १५ ॥

दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम्।
देवदैत्यकृतध्वसां वन्दे धूमावतीमहम्॥ १६ ॥

ध्वान्ताकारान्धकध्वंसां मुक्तधर्मालधारिणीम्।
धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम्॥ १७ ॥

नर्तकीटनटप्रीतां नाट्यकर्मविवर्धिनीम्।
नारसिंहीं नराराध्यां नौमि धूमावतीमहम्॥ १८ ॥

पार्वतीपतिसम्पूज्यां पर्वतोपरि वासिनीम्।
पद्मारूपां पद्मपूज्यां नौमि धूमावतीमहम्॥ १९ ॥

फूत्कारसहितश्वासां फट्मन्त्रफलदायिनीम्।
फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम्॥ २० ॥

बलिपूज्यां बलाराध्या बगलारूपिणीं वराम्।
ब्रह्मादिवन्दितां विद्यां वन्दे धूमावतीमहम्॥ २१ ॥

भव्यरूपां भवाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम्।
भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ २२ ॥

मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम्।
मत्स्यमांसमदास्वादां मन्ये धूमावतीमहम्॥ २३ ॥

योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम्।
यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम्॥ २४ ॥

रामाराध्यपदद्वन्द्वां रावणध्वंसकारिणीम्।
रमेशरमणीपूज्यामहं धूमावतीं श्रये॥ २५ ॥

लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवन्द्यपदाम्बुजाम्।
लम्बितां बीजकोशाढ्यां वन्दे धूमावतीमहम्॥ २६ ॥

बकपूज्यपदाम्भोजां बकध्यानपरायणाम्।
बालाम्बकारिसन्ध्येयां वन्दे धूमावतीमहम्॥ २७ ॥

शङ्करीं शङ्करप्राणां सङ्कटध्वंसकारिणीम्।
शत्रूसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमामवतीमहम्॥ २८ ॥

षडाननारिसंहन्त्रीं षोडशीरूपधारिणीम्।
षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम्॥ २९ ॥

सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम्।
सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम्॥ ३० ॥

हेरम्बजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम्।
हारिणीं शत्रुसङ्घानां सेवे धूमावतीमहम्॥ ३१ ॥

क्षीरोदतीरसंवासां क्षीरपानप्रहर्षिताम्।
क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम्॥ ३२ ॥

चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः।
कृतं तु हृदयस्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम्॥ ३३ ॥

य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम्।
स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः॥ ३४ ॥

पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः।
तत् सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥ ३५ ॥

॥ इति धूमावतीहृद्रयं समाप्तम् ॥

अथ शतनाम

ईश्वर उवाच—

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा।
धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी॥ १ ॥

अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता।
अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रपूजिता॥ २ ॥

अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी।
वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा॥ ३ ॥

प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा।
कराली च करालास्या कङ्काली शूर्पधारिणी॥ ४ ॥

काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरी॥ ५ ॥

दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका।
विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी॥ ६ ॥

क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी।
विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी॥ ७ ॥

चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना।
चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी॥ ८ ॥

चाण्डलिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी।
कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णारूपा क्रियावती॥ ९ ॥

कुम्भस्तनी मदोन्मत्ता मदिरापानविह्वला।
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी॥ १० ॥

शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी।
दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी॥ ११ ॥

निर्मांसा च निराकारा धूतहस्ता वरान्विता।
कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी॥ १२ ॥

महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता।
महादेवप्रिया मेधा महासङ्कटनाशिनी॥ १३ ॥

भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी।
भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका॥ १४ ॥

भेरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी।
त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयी तनुः॥ १५ ॥

त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी।
इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम्॥ १६ ॥

मया ते कथितं देवि शत्रुसङ्घविनाशनम्।
कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये॥ १७ ॥

इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटैः।
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ १८ ॥

चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥ १९ ॥

॥ इति धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ सहस्रनाम

श्रीभैरव्युवाच—

धूमावत्या धर्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर।
सहस्रनामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥ १ ॥

श्रीभैरव उवाच—

शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणी।
सहस्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रुविनाशनम्॥ २ ॥

ओमस्य श्रीधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः पङ्क्तिः छन्दो धूमावती देवता शत्रुविनिग्रहे पाठे विनियोगः।

धूमा धूमवती धूमा धूमपानपरायणा।
धौता धौतगिरा धाम्री धूमेश्वरनिवासिनी॥ ३ ॥

अनन्ताऽनन्तरूपा च अकाराकाररूपिणी।
आद्या आनन्ददा नन्दा इकारा इन्द्ररूपिणी॥ ४ ॥

धनधान्यार्थवाणीदा यशोधर्मप्रियेष्टदा।
भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वतवासिनी॥ ५ ॥

रामरावणसुग्रीवमोहदा हनुमत्प्रिया।
वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिःछन्दःस्वरूपिणी॥ ६ ॥

चातुर्यचारुरुचिरा रञ्जनप्रेमतोषदा।
कमलासनसुधावक्त्रा चन्द्रहासस्मितानना॥ ७ ॥

चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा।
कलाकालधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा॥ ८ ॥

हीराहीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना।
दम्भमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा॥ ९ ॥

नरदेवकरी रामा रामानन्दमनोहरा।
योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता॥ १० ॥

दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा।
गजगोश्वपदा गङ्गा भूतिदा भूतनाशिनी॥ ११ ॥
भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा।
भगभङ्गभया माला मालतीतालनाह्वदा॥ १२ ॥
जालवालहालकालकपालप्रियवादिनी।
करञ्जशीलगुञ्जाढ्या चूताङ्कुरनिवासिनी॥ १३ ॥
पनसस्था पानसक्ता पनसेशकुटुम्बिनी।
पावनी पावनाधारा पूर्णा पूर्णमनोरथा॥ १४ ॥
पूता पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी।
परेशी परदा पारा परात्मा परमोहिनी॥ १५ ॥
जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी।
जननी जयिनी जाया जिता जिनजयप्रदा॥ १६ ॥
कीर्तिर्ज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी।
काव्यव्याकरणज्ञाका प्रज्ञाप्रज्ञानदायिनी॥ १७ ॥
विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञाविज्ञप्रपूजिता।
परावरेज्या वरदा पारदा शारदादरा॥ १८ ॥
दारिणी देवदूती च मदना मदनामदा।
परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा॥ १९ ॥
यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञानकार्यकरी शुभा।
शोभिनी शुभ्रमथिनी निशुम्भा सुरमर्दिनी॥ २० ॥
शाम्भवी शम्भुपत्नी च शम्भुजाया शुभानना।
शाङ्करी शङ्कराराध्या सन्ध्या सन्ध्यासुधर्मिणी॥ २१ ॥
शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी।
शैवी शिवलया शैला शैलराजप्रिया सदा॥ २२ ॥
शर्वरी शबरी शम्भुः सुधाढ्या सौधवासिनी।
सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवी रवा॥ २३ ॥
गौराङ्गी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः।
गौर्गौर्गव्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी॥ २४ ॥

गणेशगणदा गुण्या गुणा गौरववाञ्छिता।
गणमाता गणाराध्या गणकोटिविनाशिनी॥ २५ ॥

दुर्गा दुर्जनहन्त्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी।
स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती॥ २६ ॥

दुर्निरीक्ष्या दुरा दुःस्था दौःस्थभञ्जनकारिणी।
श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कीलदा कालनाशिनी॥ २७ ॥

कर्मनर्मकरी नर्मा धर्माधर्मविनाशिनी।
गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया॥ २८ ॥

गङ्गा भागीरथी भङ्गा भगा भाग्यविवर्धिनी।
भवानी भवहन्त्री च भैरवी भैरवासमा॥ २९ ॥

भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्दप्रदायिनी।
शरण्या शरणा शम्या शशिनी शङ्खनाशिनी॥ ३० ॥

गुणा गुणकारी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी।
जनमोहन कर्त्री च जगदानन्ददायिनी॥ ३१ ॥

जिता जाया च विजया विजया जयदायिनी।
कामा काली करालास्या खर्वा कञ्जा खरा गदा॥ ३२ ॥

गर्वा गरुत्मती धर्मा घर्घरा घोरनादिनी।
चराचरी चराराध्या छिन्नाछिन्नमनोरथा॥ ३३ ॥

छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी।
झकारा झीष्कृतिष्टीका टङ्का टङ्कारनादिनी॥ ३४ ॥

ठीकाठक्कुरठक्काङ्गी ठठठाङ्कारढुण्ढुरा।
ढुण्ढी ताराजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी॥ ३५ ॥

थकारा थकरा दात्री दीपादीपविनाशिनी।
धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी॥ ३६ ॥

पद्मा पद्मावती पीता स्फान्ता फूत्कारकारिणी।
फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी॥ ३७ ॥

भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली मन्दगामिनी।
मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता॥ ३८ ॥

याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललिता लता।
लङ्केश्वरी वाक्प्रदा वाच्या सदाऽऽश्रमवासिनी॥ ३९ ॥
श्रान्ता शकाररूपा च षकारा खरवाहना।
सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी॥ ४० ॥
हराराध्या वा लवा च लवङ्गप्रेमतोषिता।
क्षपाक्षयप्रदा क्षीरा अकारादिस्वरूपिणी॥ ४१ ॥
कालिका कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया।
शिवा शन्दायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी॥ ४२ ॥
भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमङ्गला।
शत्रुविद्राविणी शैवी शुम्भासुरविनाशिनी॥ ४३ ॥
धकारमन्त्ररूपा च धूम्बीजपरितोषिता।
धनाध्यक्षस्तुता धीरा धरारूपा धरावती॥ ४४ ॥
चर्विणी चन्द्रपूज्या च छन्दोरूपा छटावती।
छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा॥ ४५ ॥
वल्गिनी वर्धिनी वन्द्या वेदमाता बुधस्तुता।
धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा॥ ४६ ॥
गर्विणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता।
धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादपरायणा॥ ४७ ॥
घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी।
कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्या कलिप्रिया॥ ४८ ॥
कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी।
वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी॥ ४९ ॥
घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी।
धूम्बीजा धूञ्जपानन्दा धूम्बीजजपतोषिता॥ ५० ॥
धून्धूम्बीजजपासक्ता धून्धूम्बीजपरायणा।
धूङ्कारहर्षिणी धूमा धनदा धनगर्विता॥ ५१ ॥
पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता।
अपारापूरणी पूर्णा पूर्णिमा परिवन्दिता॥ ५२ ॥

फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी।
फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलान्विता।। ५३ ।।

वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा।
विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी।। ५४ ।।

नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा।
तारिणीताररूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा।। ५५ ।।

स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी।
स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता।। ५६ ।।

शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी।
शारिणी शाङ्खिनी शुद्धा शङ्खासुरविनाशिनी।। ५७ ।।

शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीशप्रपूजिता।
शर्वरीजाग्रिता योग्या योगिनी योगिवन्दिता।। ५८ ।।

योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोगभाविता।
योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी।। ५९ ।।

योगभावा योगयुक्ता यामिनीपतिवन्दिता।
अयोग्या योधिनी योध्री युद्धकर्मविशारदा।। ६० ।।

युद्धमार्गरताऽनन्ता युद्धस्थाननिवासिनी।
सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी।। ६१ ।।

सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धान्तकारिणी।
सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवन्द्या सुसिद्धिदा।। ६२ ।।

साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी।
साधनीया साध्यसाध्या साध्यसङ्घसुशोभिनी।। ६३ ।।

साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसन्ततिदायिनी।
साधुपूज्या साधुवन्द्या साधुसन्दर्शनोद्यता।। ६४ ।।

साधुदृष्टा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा।
सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया।। ६५ ।।

सत्त्ववृद्धिकरी शान्ता सत्त्वसंहर्षमानसा।
सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धान्तकारिणी।। ६६ ।।

सत्त्ववृद्धिः सत्त्वसिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा।
चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना।। ६७ ।।

छद्मिनी छद्मसङ्कल्पा छद्मवार्ता क्षमा प्रिया।
हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्ता हठोद्यमा।। ६८ ।।

हठकार्या हठधर्मा हठकर्मपरायणा।
हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिया।। ६९ ।।

हठसम्भेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया।
हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणी मांसभक्षणा।। ७० ।।

हरिणाक्षी हरिणपा हरिणीगणहर्षदा।
हरिणीगणसंहर्त्री हरिणीपरिपोषिका।। ७१ ।।

हरिणी मृगयासक्ता हरिणी मानपुरस्सरा।
दीना दीनाकृतिर्दूना द्राविणी द्रविणप्रदा।। ७२ ।।

द्रविणाचलसंवासा द्रविता द्रव्यसयुता।
दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः।। ७३ ।।

दृढा द्विष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभञ्जिनी।
दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी।। ७४ ।।

देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसङ्घविदारिणी।
दुष्टदानवहन्त्री च दुष्टदैत्यनिषूदिनी।। ७५ ।।

देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी।
नटनायकसंसेव्या नर्तकी नर्तकप्रिया।। ७६ ।।

नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी।
नवीननूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी।। ७७ ।।

नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालङ्कारशोभिता।
नकारवादिनी नम्या नवभूषणभूषिता।। ७८ ।।

नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः।
नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानन्दप्रदायिनी।। ७९ ।।

नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी।
नारामध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा।। ८० ।।

नारीप्रीतिर्नराराध्या नरनामप्रकाशिनी।
रती रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा॥ ८१ ॥

रतिस्थानस्थिताराध्या रतिहर्षप्रदायिनी।
रतिरूपा रतिध्याना रतिरीतिसुधारिणी॥ ८२ ॥

रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी।
रतिकान्तस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी॥ ८३ ॥

अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता।
रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती॥ ८४ ॥

रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा।
मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा॥ ८५ ॥

मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी।
मद्यपानन्दसन्दात्री मद्यपप्रेमतोषिता॥ ८६ ॥

मद्यपानरता मत्ता मद्यपानविहारिणी।
मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी॥ ८७ ॥

मदिरापानसन्तुष्टा मदिरापानमोहिनी।
मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा॥ ८८ ॥

माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता मदा।
मोदिनी मोदसन्दात्री मुदिता मोदमानसा॥ ८९ ॥

मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी।
मोदकादानसन्तुष्टा मोदकग्रहणक्षमा॥ ९० ॥

मोदकालब्धिसङ्क्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी।
मांसादा मांससम्भक्षा मांसभक्षणहर्षिणी॥ ९१ ॥

मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता।
मत्स्यमांसकृतास्वादा मकारपञ्चकान्विता॥ ९२ ॥

मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी।
मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा॥ ९३ ॥

मुद्रिकालङ्कृता माद्री मन्दराचलवासिनी।
मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी॥ ९४ ॥

मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी।
मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता॥ ९५ ॥

महामारी महामारीशमिनी शवसंस्थिता।
शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी॥ ९६ ॥

श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशानभवनस्थिता।
श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता॥ ९७ ॥

श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी।
शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता॥ ९८ ॥

शमनाचारसन्तुष्टा शमनागारवासिनी।
शमनस्वामिनी शान्तिः शान्तसज्जनपूजिता॥ ९९ ॥

शान्तपूजापरा शान्ता शान्तागारप्रभोजिनी।
शान्तपूज्या शान्तवन्द्या शान्तग्रहसुधारिणी॥ १०० ॥

शान्तरूपा शान्तियुक्ता शान्तचन्द्रप्रभाऽमला।
अमला विमला म्लाना मालतीकुञ्जवासिनी॥ १०१ ॥

मालतीपुष्पसम्प्रीता मालतीपूष्पपूजिता।
महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी॥ १०२ ॥

मध्यमध्वनिसम्प्रीता मध्यमध्वनिकारिणी।
मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेमपूरिता॥ १०३ ॥

मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता।
महेन्द्रकृतसम्पूजा महेन्द्रपरिवन्दिता॥ १०४ ॥

महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी।
महेन्द्रमानिताऽमाना मानिनीगणमध्यगा॥ १०५ ॥

मानिनीमानसम्प्रीता मानविध्वंसकारिणी।
मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिदा॥ १०६ ॥

मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी।
निर्मला मूलसंयुक्ता मूलिनी मूलमन्त्रिणी॥ १०७ ॥

मूलमन्त्रकृतार्हाद्या मूलमन्त्रार्घ्यहर्षिणी।
मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्री मूलमन्त्रप्रहर्षिणी॥ १०८ ॥

मूलमन्त्रप्रसन्नास्या मूलमन्त्रप्रपूजिता।
मूलमन्त्रप्रणेत्री च मूलमन्त्रकृतार्चना॥ १०९ ॥

मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्यामलापहा।
विद्याऽविद्यावटस्था च वटवृक्षनिवासिनी॥ ११० ॥

वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा।
वटपूजापरिप्रीता वटदर्शनलालसा॥ १११ ॥

वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्धिनी।
वाशिनी विवशाराध्या वशीकरणमन्त्रिणी॥ ११२ ॥

वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा।
बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी॥ ११३ ॥

बटुकार्चा परापूज्या बटुकार्चाविवर्धिनी।
बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी॥ ११४ ॥

बटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया।
पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता॥ ११५ ॥

पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा।
पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहनी॥ ११६ ॥

पार्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी।
पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता॥ ११७ ॥

पद्मजेड्यपदा पद्ममालालङ्कृतमस्तका।
पद्मार्चितपदद्वन्द्वा पद्महस्ता पयोधिजा॥ ११८ ॥

पयोधिपारगन्त्री च पायोधि[१]परिकीर्तिता।
पायोधि[२]पारगा पूता पल्वलाम्बुप्रतर्पिता॥ ११९ ॥

पल्वलान्तःपयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः।
पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकाङ्क्षिणी॥ १२० ॥

पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा।
मुण्डिनी मुण्डहन्त्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता॥ १२१ ॥

मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता।
महामोहा महामर्षा महामाया महाहवा॥ १२२ ॥

१. पाथोधि पाठः।
२. पाथोधि पाठः।

मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्धिनी।
मठिनी मठसंहन्त्री मठसम्पत्तिहारिणी॥ १२३ ॥

महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रुविनाशिनी।
पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णहारविहारिणी॥ १२४ ॥

प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी।
प्रलयार्णवसम्मग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी॥ १२५ ॥

महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी।
महाप्रलयसम्प्रीता महाप्रलयसाधिनी॥ १२६ ॥

महामहा प्रलयेज्या महाप्रलयमोदिनी।
छेदिनी छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्नरुहार्थिनी॥ १२७ ॥

शत्रुसंछेदिनी छन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी।
लक्षिणी लक्षसम्पूज्या लक्षिता लक्षणान्विता॥ १२८ ॥

लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी।
लक्षपूजापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी॥ १२९ ॥

लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी।
लक्षलीला लयालभ्या लाक्षागारनिवासिनी॥ १३० ॥

लक्षकोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता।
लोकिनी लोकसम्पूज्या लोकरक्षणकारिणी॥ १३१ ॥

लोकवन्दितपादाब्जा लोकमोहनकारिणी।
ललिता लालिता लीना लोकसंहारकारिणी॥ १३२ ॥

लोकलीलाकरी लोक्या लोकसम्भवकारिणी।
भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी॥ १३३ ॥

भूतवेतालसंयुक्ता भूतसेनासमावृता।
भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूतपूजिता॥ १३४ ॥

डाकिनी शाकिनी डेया डिण्डिमारावकारिणी।
डमरुवाद्यसन्तुष्टा डमरुवाद्यकारिणी॥ १३५ ॥

हूङ्कारकारिणी होत्री हाविनी हवनार्थिनी।
हासिनी ह्रासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी॥ १३६ ॥

२४

अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी।
टङ्किनी टङ्किताटङ्काटटङ्कमात्रसुवर्णदा॥ १३७ ॥

टङ्कारिणी टकाराढ्या शत्रुत्रोटनकारिणी।
त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसन्देहकारिणी॥ १३८ ॥

तर्षिणी तृट्परिक्रान्ता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता।
अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी॥ १३९ ॥

काङ्क्षिणी कुट्टनी क्रूरा कुट्टनीवेश्मवासिनी।
कुट्टनीकोटिसम्पूज्या कुट्टनीकुलमार्गिणी॥ १४० ॥

कुट्टनीकुलसंरक्षा कुट्टनीकुलरक्षिणी।
कालपाशावृता कन्या कुमारी पूजनप्रिया॥ १४१ ॥

कौमुदी कौमुदीहृष्टा करुणादृष्टिसंयुता।
कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी॥ १४२ ॥

काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता।
काकाङ्करथसंस्थाना काकाङ्कस्यन्दनास्थिता॥ १४३ ॥

काकदर्शनसंशीला काकसङ्कीर्णमन्दिरा।
काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्या धमावृता॥ १४५ ॥

धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी।
धुन्धुरा धुन्धुराकारा धूम्रलोचनघातिनी॥ १४६ ॥

धूङ्कारिणी च धूम्मन्त्रपूजिता धर्मनाशिनी।
धूम्रवर्णिनी धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी॥ १४७ ॥

धूम्बीजजपसन्तुष्टा धूम्बीजजपमानसा।
धूम्बीजजपपूजार्हा धूम्बीजजपकारिणी॥ १४८ ॥

धूम्बीजाकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा।
धूलीप्रक्षेपिणी धूलीव्याप्तधम्मिल्लधारिणी॥ १४९ ॥

धूम्बीजजपमालाढ्या धूम्बीजनिन्दकान्तका।
धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता॥ १५० ॥

धारास्तम्भकरी धूर्ता धारावारिविलासिनी।
धां धीं धूं धैं मन्त्रवर्णा धौं धः स्वाहास्वरूपिणी॥ १५१ ॥

धरित्री पूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी।
धिक्कारिणी सुधीपूज्या धमोद्यानविवासिनी।। १५२ ।।

धामोद्यानपयोदात्री धामधूलीप्रधूलिता।
महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी।। १५३ ।।

धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी।
धीवरीगणसम्पूज्या धीवरीवरदायिनी।। १५४ ।।

धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी।
धीवरीगणगोष्ठ्री.च धीवरीगणतोषिता।। १५५ ।।

धीवरी धनदात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी।
धात्रीशा धातृसम्पूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया।। १५६ ।।

धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी।
धूम्रपानरतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा।। १५७ ।।

धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी।
धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुन्धुकारी जनच्छिदा।। १५८ ।।

धुन्धुकारीष्टसन्दात्री धुन्धुकारिसुमुक्तिदा।
धुन्धुकार्याराध्यरूपा धुन्धुकारिमनःस्थिता।। १५९ ।।

धुन्धुकारिहिताकाङ्क्षा धुन्धुकारिहितैषिणी।
धिन्धिमा राविणी ध्यात्री ध्यानगम्या धनार्थिनी।। १६० ।।

धोरिणी धोरणप्रीता धारिणी घोररूपिणी।
धरित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी।। १६१ ।।

धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः।
धनाध्यक्षा.धनप्राप्तिर्धनधान्यविवर्धिनी।। १६२ ।।

धनाकर्षणकत्री च धनाहरणकारिणी।
धनच्छेदनकत्री च धनहीना धनप्रिया।। १६३ ।।

धनसंवृद्धिसम्पन्ना धनदानपरायणा।। १६४ ।।

धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी।
धनरक्षा धनप्राणा धनानन्दकरी सदा।। १६५ ।।

शत्रुहन्त्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी।
शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी॥ १६६ ॥

शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी।
शत्रुप्राणहरा हार्या शत्रून्मूलनकारिणी॥ १६७ ॥

शत्रुकार्यविहन्त्री च साङ्गशत्रुविनाशिनी।
साङ्गशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदायिनी॥ १६८ ॥

साङ्गसायुध्यसर्वारिसर्वसम्पत्तिनाशिनी।
साङ्गसायुधसर्वारिदेहगेरप्रदाहिनी॥ १६९ ॥

इतीदं धूमरूपिण्याः स्तोत्रं नामसहस्रकम्।
यः पठेच्छून्यभवने स ध्वान्ते यतमानसः॥ १७० ॥

मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायणः।
तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोऽपि वै॥ १७१ ॥

भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत्।
स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं मम वक्त्राद् विनिर्गतम्॥ १७२ ॥

पठेद् वा शृणुयाद् वाऽपि शत्रुघातकरो भवेत्।
न देयं परशिष्यायाभक्ताय प्राणवल्लभे॥ १७३ ॥

देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तिपराय च।
इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम्॥ १७४ ॥

॥ इति धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ इति शाक्तप्रमोदे धूमावतीतन्त्रं समाप्तम् ॥